सहयोग करते है। उसी तरह गुरुमा की करुणा, प्रेम सभी पर बराबरी से ही बरसती है। इसके पश्चात भू.पू. श्री हिरेनभाई के द्वारा मंत्रोच्चार करके वर्धमान शक्रस्तव श्री महावीर स्वामी व गुरुमंदिर मे अभिषेक करके किया गया। तथा भगवान के 273 विशेषणो के बारे मे समझाया। बाद में सभी तपोवनी छात्रो के द्वारा गुरुमा को पत्र लिखा गया तत्पश्चात गुरुमा गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन Class 10th के छात्र भावेश खिवेसरा के द्वारा किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ तपोवन की सबसे छोटी कक्षा अर्थात् Class 5th के Student's से किया गया। जिसमें छात्र ज्ञानेन्द्र कोठारी, पक्षाल राठोड, शुभम् शाह व भूवनेश थे। जो कविता के रुप मे गुरु का महत्व बताने आए थे। ज्ञानेन्द्र के द्वारा बताया गया की गुरुमा युवाओ का दल बनाने तथा उनके द्वारा कार्य करवाने मे जोर देते थे। पक्षाल ने कहा की गुरुमा के प्रवचन सिंह गर्जना के समान ओजस्वी व तेज थे।

शुभम के द्वारा गुरुमा का जीवन परिचय तो वही भूवनेश ने गुरुमा रुपी सूर्य का सूर्यास्त कब और कहाँ हुआ था यह बताया गया। उसके पश्चात प.पू. अनन्त सुंदरजी म.सा. ने गुरुमा की विशेषताओ के बारे मे बताया व कहा कि गुरुमा उपकारी नहीं महाउपकारी, मित्र नहीं परममित्र तथा हित-चिंतक नहीं परम हित चिंतक थे। उसके बाद श्री भवभिरु म.सा. ने बताया की गुरुमा ने कितने ही कत्ल खाने बंद करवायें व 300 से भी अधिक ग्रंथ लिखे है। तत्पश्चात Class 7th के धैर्य व वंश जैन Class 6th के द्वारा सामूहिक गीत प्रस्तुत किया गया।

उसी के बाद Class 6th के प्रित शाह ने गुरुमा के करुणा गुण का बखान करती हुई एक सुंदर कविता का गायन किया। कार्यक्रम की अगली कढी मे Class 6th के वैभव जैन ने बताया की गुरुमा गुणो की पोथी थे। वह उनके प्रवचन में बताते थे कि अपने बच्चो को टी.वी. के दोष रुपी आक्रमण से जरुर दूर रखना।

इसके बाद श्री परम तेज वि.म.सा. के प्रवचन का लाभ प्राप्त हुआ। उनके द्वारा बताया गया की यदि गुरुमा को सच्ची श्रद्धांजली देनी है तो जीवन मे सदैव अच्छे गुणो को आत्मसात् करे। तत्पश्चात Class 7th के किर्तन कोठारी ने अपने वक्तव्य मे गुरुमा का दृष्टांत बताते हुए कहा कि गुरुमा की रुची बचपन से ही धर्म की ओर थी वह जैन धर्म के नियमो का पालन करनेवाले थे।

उसके बाद Class 10th के तपोवनी छात्र मानव भार्गवभाई शाह के द्वारा गुरु के उपर एक गीत प्रस्तुत कीया गया। तत्पश्चात प.पू. राजर्षि म.सा. के द्वारा बताया गया कि गुरुमा जब सांसारिक जीवन में थे तब दिन की एक गाथा भी नहीं कर सकते थे। लेकिन दिक्षा लेने के बाद जब प.पू. आचार्य प्रेमसूरिश्वर दादाने हाथ गुरुमा के सिर पर रखा तब से वह एक दिन में 400 गाथाएँ कर लेते थे। कार्यक्रम की अगली कडी में Class 8th के हर्षित हितेशभाई खाटसुरिया के द्वारा बताया गया कि गुरुमा ने तीर्थ रक्षा के लिए पुलिस की लाठिया भी खाई थी, और गुरुमा चाहे प्रत्यक्ष रुप से हमारे साथ नहीं है। लेकिन परोक्ष रुप से आज भी सबके हृदय मे निवास करती है। इसी पावन बेला मे Class 8th के ही जिनांश नीमेषभाई शाहने समझाया कि गुरुमा तो गुणो की खान थे। उनके जीवन का यदि एक गुण भी हम आत्मसात करले तो हमारा जीवन धन्य हो जाएगा।

इसी के साथ सभी बच्चो के हृदय मे निवास करनेवाले प.पू. योगरुची गुरुजीने

बताया कि गुरुमा गुणो के भण्डार थे। उनके गुणो को पानी की एक-एक विशेषता को लेते हुए समझाया। कार्यक्रम की उसी बेला में Class 9th के आकाश तातेडने बताया की प.पू. पन्यास प्रवर आचार्य सम श्री चन्द्रशेखरजी म.सा. के मनमे जीवो के प्रति करुणा व प्रेम बहुत था वे छोटे से जीव की रक्षा के लिए दुखते हुए कान का दर्द सहन कर सकते थे, लेकिन गर्म तेल डालकर जीवहत्या नहीं कर सकते थे।

इतनी महेरबानी मेरे ईश्वर बनाये रखना,
जो रास्ता सही हो उसी पर चलाये रखना।
न दुखे दिल गुरुमा का मेरे शब्दो से,
इतना रहम तू मेरे भगवान मुझपे बनाये रखना।

इसी बेला मे Class 9th के मेघ दिपेशभाई मोरखीया द्वारा बताया गया कि गुरुमा जन्मदिन पर पार्टी नहीं करते थे। बल्कि गरीबो को बूंदी के लडडू व खिचडी देते थे व गायो को लापसी व केला खिलाते थे । इस कारण गुरुमा की वह परम्परा आज भी नवसारी तपोवन में चली आ रही है। यहाँ आज भी जिस बच्चे का जन्मदिन हो वह अपने हाथ से गाय को केले व लापसी खिला सकता है। गुरुमा जनमदिनांक नहीं अपितु जन्मतिथि मनाने पर जौर देते थे। इसी कारण से तपोवन मे बच्चो का जन्मदिन तिथि के अनुसार ही मनाया जाता है।

उम्मीदे तेरती रहती है,
कश्तीया डूब जाती है ।
कुछ कर सलामत रहते है,
आंधियाँ जब भी आती है ।
बचा ले जो हर तूफा से, उसे 'आश' कहते है,
बडा मजबूत है ये धागा, जिसे 'विश्वास' कहते है ॥

एसा ही विश्वास, उत्साह व हर कार्य को दक्षता से करनेवाले एसे वीर तपोवनी छात्रो के सराहनीय प्रयास से गुरुमा गुणानुवाद का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इसी सफर मे 'ढलती शाम से लेकर, सुनहरी रात का प्रवेश होता है ।
बस अब और कुछ नहीं, प्रभु भक्ति व मुलाकात का समय होता है ॥

निश्चित ही जिस उत्साह के साथ हर तपोवनी छात्र, मोटाभाई-मासीबा ने अपना एक-एक पल देकर पूरे कार्यक्रम को सफल बनाया है। उसी गुरुमा के प्रति प्रेम को सभी ने भक्ति व संध्याआरती के समय झूमकर प्रभुभक्ति करके दर्शाया है। भक्ति बहुत लम्बे समय तक चलती रही।

वक्त नूर को बेनूर कर देता है, हर अपने को अपनो से दूर करता है ।
कौन चाहता है प्रभु भक्ति की बेला से दूर होना,
लेकिन वक्त सबको मजबूर करता है॥

इसी के साथ गृहपति द्वारा आज के कार्यक्रम की समाप्ती की घोषणा की गई व कहा गया कि आज के कार्यक्रम की सफलता मे समिति के सभी सदस्य, मोटाभाई-मासीबा व सभी बच्चो का सराहनीय प्रयास था।

- प्रिया मासीबा